7-4-67 ओम् शान्ति रात्री क्लास

सभी बच्चे समझते है कि हम यहाँ आये है बेहद के बाप से वर्सा लेने। और कोई कि बुधी मे हो नही सकता। बेहद का वर्सा भी हो 21 जन्मो लिये। और बच्चों को अतिइन्द्रिय सुख भी भासता होगा। अब 84 का चक्र पूरा हुआ। अब जाते है अपने घर बाबा पास। बाद लक्ष्मी नारायण के घर जाकर बरसे। पुआइन्टस धारन कर फिर जाकर औरों को आपसमान बनाना है। तुम बच्चों को कथा ही है अपनी राजधानी बनाना है। अब रावण के राज्य मे हो। फिर अपनी राजधानी पानी है। राजधानी मिलती है बाप से। रावण को बाप नही कहेंगे। बच्चे जानते है वर्सा बाप से मिलता है। रावण से वर्सा नही मिलता है। उससे तो श्राप मिलता है। रावण बेसमझ बना देते है। अब बाप मिला है। तुम भी बाप मिसल बनते जाते हो। बाप को भी जानते हो। सृष्टी चक्र को भी जानते हो फिर तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो। तुम बच्चों को याद की यात्रा बहुत जरूरी है। याद मे ही मेहनत है। यह बहुत भारी फुरना है। चक्री माया की याद मे लगती है। स्वदर्शन चक्रधारी बन बैठे हो। मुख्य है याद। याद के लिये खास बैठाया नही जाता है। तुम योग नाम लेते हो तो समझते है कि योग मे बैठना होगा। याद मे बैठने की दरकार नही है। यह तो उठते बैठते चलते फिरते प्रैक्टिस करनी है। बैठेंगे तो भी संकल्प बहुत आवेंगे। इसलिये चलते फिरते यह प्रैक्टिस करनी है। तुम आशिक हो अब माशुक मिला है उनको जान लिया है। अब तुमको ज्ञान मिला हुआ है। अपने को भी इटार्नल समझ बाप को याद करना है। यह फुरना रखना है कि हम सतोप्रधान बने। कोशिश कर याद की यात्रा को मजबूत करो। यह है मेहनत। यह अन्त तक चलेगी। ज्ञान तो सहज है मेहनत है तो याद की। जिससे तुम पावन बनेंगे। याद से खुशी रहेगी। कन्या पति को याद करना खुशी मे रहती है नां। तो प्यार से बाप को याद करना है। बाबा आपसे तो विश्व की बादशाही मिलती है। मन नां मिल चित बाप आकर मिले है। ऐसे-2 बाते करते रहो। अच्छा गुड नाईट

10-4-67:- रात्रीक्लास:- जैसे बाप सच्चा है। बाप को ट्रुथ कहा जाता है। वो बच्चों को भी सच्चा बनाते है। पहले-2 सच्ची बात सुनाते है कि मै तुम बच्चों का बाप हूं। सर्वव्यापी नही हूं। सर्वव्यापी कहना माना ही गाली देना। कच्छ अवतार वाराह अवतार कितनी बड़ी गाली देते है। सब झूट बोलते है बाप के लिये। बाप आकर सच्चा बनाते है। सच बताते। ऐसा सच्चा बनाते है जो कि तुम आधा कल्प फिर झूठ कभी बोलते नही हो। यहाँ तो झूठ मिरयी झूठ सत्य की रती नही। वहाँ झूठ की रती नही। अभी तो है ही झूठ खण्ड। बाप आकर सत्य बताते है। चित्रों मे लिखा हुआ है बाप ने दिव्यदृष्टी द्वारा बनवाया है। बच्चे देख कर आकर बनाते है। फिर बाप आकर करेक्शन करते है। तुम काल पर विजय पाते हो। भगवान को कालों का काल महाकाल कहा जाता है। समझते है नां भगवान काल को भेज देते है। अभी तुम जानते हो कि बाप सबको साथ ले जाते है। सत्यवान सावित्री की कहानी है नां। अब बुलाते भी है हे पतित पावन आकर हमको साथ ले चलो। सभी मौत के घाट पर उतरते है। अब बच्चे जानते है इसमे भी कल्याण है। इस लड़ाई मे भी कल्याण भरा हुआ है। वो कहते है पीस हो शान्ति हो। तुम जानते हो खूब अशान्ति होगी। तुम कोई ऐसे नही बोलते हो। जानते हो ड्रामा मे नूँध है। यह है महाभारी महाभारत की लड़ाई। तुम्हारे इस यज्ञ मे जो कुछ भी देखने मे आता है वो सब स्वाहा हो जावेगा। और सा० भी किया है विनाश होना है। गीता मे भी अर्जुन को विनाश स्थापना का सा० हुआ। तो समझना चाहिये कि कोई चेंज होता है। एक अर्जुन को तो सिर्फ सा० नही कराया है। सो भी फिर घोड़े गाड़ी मे। यह तुम जानते हो इस याद से ही कृष्ण ने यह पद पाया है। तुम्हारे आगे इस ज्ञान मे सारी दुनिया बुद्धु है। फिर सतयुग मे तुम बेवकूफ बन जाते हो। सबसे दुर्लभ यह तुम्हारा जन्म है। ईश्वरीय गोद मे आते हो नां। गुड नाईट